Dr. Madan Paswan - History.

Class : B.A. Part-II (Hons.) Paper-IVth

Topic : Consequences of Second World war.

Lecture No. 33

Date : 30.10.2020

प्रथम विश्वयुद्ध के व्यापक प्रसार और उनके कारण हुए विनाश के फलस्वरूप अर्थव्यवस्था, समाज और चिंतन में ऐसे परिवर्तन आए जिनके कारण पूर्व स्थिति असंभव था। इन परिवर्तनों की अनुभूति क्रमश: हुई थी और यूरोप के सभी देशों में एक समान नहीं थी। इन परिवर्तनों की व्याप्ति दो तत्वों पर आधारित थी—

(क) कोई देश युद्ध में किस सीमा तक अन्तर्ग्रस्त था और वह युद्ध में विजयी हुआ था अथवा पराजित। स्पष्टतः इन परिवर्तनों से पुर्तगाल की अपेक्षा फ्रांस अधिक प्रभावित हुआ था।

(ख) फ्रांस की भारी संख्या में जनहानि हुई थी और युद्ध में 14,00,000 लोग मारे गए थे। युद्ध के बाद जन्म-दर में भी बराबर गिरावट होने लगी। उत्पादकों और उपभोक्ताओं की संख्या में कमी होने से Economic, राष्ट्रीय सुरक्षा तथा देश का बौद्धिक जीवन प्रभावित हुए थे।

सैनिक कार्यवाही से भी अधिक विस्तृत आधार पर फ्रांस में भारी क्षति हुई थी। 30 लाख हेक्टर भूमी बेकार हो गई थी, पुल टूट गए थे, रेल-व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई थी।

1914 की याद ताजा बनी रही। असंख्य लोगों की मृत्यु, असंख्य विधवा हुई स्त्रियाँ और सर्वत्र दिखाई देने वाले विनाश ने इस काल में याद को ताजा बनाए रखा था। मृतकों के लिए स्मारकों का निर्माण हो रहा था, श्रद्धांजलियाँ दी जा रही थीं और वेरदन तथा स्ट्रासबुर्ग आदि स्थानों की धार्मिक यात्राएँ की जा रही थीं।

यद्यपि फ्रांस युद्ध में विजयी हुआ था, उस पर 20,500 करोड़ फ्रांक का राष्ट्रीय ऋण लादे जाने पर लद ही गया था। युद्ध में आहत व्यक्तियों को राहत देने की और पुनर्निर्माण की तुरंत आवश्यकता थी।

युद्ध-पीड़ितों को पेंशन देने की व्यवस्था की गई थी किन्तु खर्चे की पूर्ति कराधान से न करके जर्मनी द्वारा की गई क्षतिपूर्ति से की जानी थी। युद्ध में भाग लेने वाले सैनिकों का एक नया सामाजिक वर्ग बन गया था जो अनेक मामलों में अपने दबाव के द्वारा

Contd...

महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रभाव का प्रदर्शन करता था। यही भूतपूर्व सैनिक क्रुआ-द-फ (Croix-de-feu) जैसी लीग (जो राजनीतिक रंगमंच के दक्षिणपंथी दलों में अग्रणी था) के सदस्य बने।

Continue.....